राम के नाम

पात्रः हाँ तो मेहरबान कदरदान थूकदान पीकदान पानदान बंद करले अपनी सोच की दुकान, खोल के रखे सिर्फ कान..... और हाँ इधर ही रहे ध्यान... क्यों कि अब होनवाला है एलान..... (सुनकर पात्र 2,3,4, स्टेज पर आते हैं....)

पात्र – 2: क्या एलान? बंद का एलान.....

पात्र – 1: हाँ बंद का एलान.....।

पात्र – 3: कलीयुग..... घोर कलीयुग.....
बात है कलीयुग के चारों और अंधेरा
धरम करम सब भूल चुके हैं दिखता नहीं सवेरा.
सभी धरम की इस बस्ती में ढूंढते है सहारा
कोरट कमीशन सब औरों के कोई नहीं हमारा

पात्र – 2: सही बात है.....

पात्र – 3: लेकिन मंत्री – संत्री सब हमारे.... पुलीस दल भी हमारा..... अखबार बाले भाषा हमारी फिर क्यों ढुंढे सहारा (2)।

पात्र – 1: तुम बहोत सोचते हो..... सोचना नहीं तुम्हारा काम..... बंद करो यह सोच की दुकान..... चैन से जपो राम के नाम..... सोचने का काम हम करेंगें..... तुम करो सिर्फ चक्काजाम.....

पात्र – 2: मतलब बंद..... वैसे भी मुझे नोकरी नहीं है..... अब तो बंद ही सही हैं.....

पात्र – 4: लेकिन हम कर क्या सकते हैं?

पात्र –1 : इस बस्ती की हर गली में राम नाम का नारा हो याद रहें बस एक ही बात धर्म सिर्फ हमारा हो.....

पात्र – 3: मतलब..... ऐसा कैसे होगा?

पात्र – 1: बराबर है..... धरम.... धरम..... धरम.... और नहीं कोई करम।

पात्र – 2: जरूरत है धर्म की वही हमारा काम.....

पात्र – 1: जपेंगें हम राम का नाम..... बाकी सबका का काम तमाम.....

पात्र – 3: तो बोलो श्री राम..... जय राम.... जय जय राम.....
(सब साथ श्री राम..... जय राम..... जय जय राम.....)
(राम नाम की गूंज नेपथ्य से..... राम और हनुमान का प्रवेश)

पात्र – 5: अने आक करमजले क्यों इतना शोर मचाते हो, मेरे राम लल्ला जग जाऐंगें वह तुम्हारी बाते सुनकर थोडे ही आएंगें वह तो हम जैसे सच्चे भक्त बुलाएंगें तभी आएंगें।

रामः नाम हमारा भूल गये सब क्या नक क्या नारी।

हनुमानः अने वह वब तो ठीक है प्रभु आप बहोत हैं भारी इस भक्त को अपनी शरण में लीजिए जरा बोझ मेरे कंधो का कम किजीए जरा।

रामः ठीक है वत्स (कुछ सुनने का प्रयत्न करते हुए) वत्स हनुमान.....

हनुमानः जी प्रभु.....

रामः तुम्हें कुछ सुनाई देता हैं?

हनुमानः प्रभुजी मुजे तो आपके अलावा न कुछ सुनाई देता है न कुछ दिखई देता है।

रामः सुनो..... ध्यान से सुनो वत्स..... रामनाम की धून सुनाई देती है.....
चलो इस कलियुग में थोडी सी शांति तो मिलती है।

हनुमानः माफ करना प्रभुजी कान में है तकलीफ जना सुनता हुं सब उल्टा–पुल्टा राम की जगह मरा मरा

रामः उल्टा – पुल्टा कर देने की आदत तेरी पुरानी लंका नहीं भरत है यह और राम भक्तों की कहानी ऐसे क्या खडे हो क्या हमें जाकर सुनना नहीं.....?

हनुमानः प्रभुजी मन मेरा मानता नहीं इस कलियुग में राम भक्तों का कोई ठीकाना नहीं।

रामः हम भेस बदल कर जाऐंगें मुझे नहीं लगता यह हमें पहचान भी पाऐंगें.....।

हनुमानः जैसे प्रभु की आज्ञा। (राम को कंधे पर बिठाता हैं।) जय श्री राम

(म्पज..... बाकी पात्रों का प्रवेश)

पात्र – 1: सुनो सुनो सुनो..... खोल कर अपने कान.... इसबार सचमुच का एलान..... सुनो सुनो सुनो.....

(1) हृदय की तृप्ती के लिए.... आत्मा की मुक्ती के लिए.....

(2) मन की शांति के लिए..... धर्म की भ्रांती के लिए....

(3) हम ये एलान करते हैं कि धर्म की ऐसी लहर जगायेंगें प्रभु श्री रामचंद्र की सुंदरसी मूर्ती बनाऐंगें। जागे हुए का सुलाऐंगें.... सोये हुए को स्वप्न दिखाऐंगें हम कसम राम की खाते हैं मूर्ती जरूर बनाएंगें।

(1) हम कसम राम की खाते हैं नहीं जरा आराम गली गली चौंटे चौंटे पर होगा राम का नाम जागते राम..... सोते राम.... उठते बैठते राम ही राम.....

सब साथः हम कसम राम की खातें राम नाम पे खाऐंगें..... राम नाम पियेंगें....

राम नाम पे मरेंगें..... राम नाम पे मरेंगें.....(राम और हनुमान का प्रवेश)

रामः सुना वत्स हनुमान.... कलीयुग कलीयुग करते हो..... मेरे नाम का इतना प्रभाव.... मेरा तो दिल भर आया हैं..... लगता हैं कलीयुग का तो अब अंत ही आया हैं.....

सब साथः हम कसम राम की खातें हैं राम के लिए जिऐंगें..... राम के लिए मरेंगें.....

राम के लिए मरेंगें..... राम के लिए मारेंगें....(राम चौक कर हनुमान की और देखते हैं)

पात्र – 7: राम चंद्र कह गए सिया से ऐसा कलीयुग आऐंगा हंस चुकेगा दाना गुन का कौआ मोती खाएगा

सब साथः कौआ मोती खाएगा..... (2)

रामः वत्स हनुमान.... तुम वही सुन रहे हो जो में सुन रहा हुं.....?

हनुमानः जी प्रभुजी कलीयुग..... कलीयुग के यह भक्त सारें..... वहीं तो में कह रहा हुं....

पात्र – 6: नहीं नहीं मेरे नामजी सारे भक्त ऐसे नहीं हैं। यह सब मुवें कौवें हैं जो मुर्दों को भी लोंचते हैं।

रामः सुना वत्स हनुमान ऐसे भी भक्त है लेकिन कितने..... तो अब हम चुपचाप तो नहीं रह सकते..... हमारे नाम से ऐसी बाते ऐसे ही तो नहीं सह सकते.

हनुमानः तो फिर हो जाईए प्रगट प्रभु जी लेकर राम का नाम.... अवतार धरें कलीयुग में.... अब खत्म हुआ आराम..... (राम हनुमान प्रगट होते हैं।)

रामः सुनिऐं लगता है आप कुछ गलत बातें बतातें हैं, राम के नाम मरेंगें या मारेंगें के नारे लगाते हैं।

पात्र – 1: अरे कैसे कैसे लोग यहां स्टेज पर चले आते हैं.....

पात्र – 2: धर्म के काम में खुलेआम टांग अडाते हैं।

पात्र – 3: जानते नहीं कौन है हमा कहां से आये हैं और कहां जाते हैं.....

पात्र – 4: धर्म का संस्थापन होगा के नारे लगाते हैं।

पात्र – 1: वाह यह नारा अच्छा हैं.... बोला धर्म का संस्थापन होगा.....

रामः शांति और सुख होगा?

पात्र – 2: धर्म का संस्थापन होगा.....

हनुमानः चैन और अमन होगा?

पात्र – 3: धर्म का संस्थापन होगा.... य ऐसा अनुशासन होगा.....

रामः क्या आबादी और विकास होगा.....

पात्र – 4: धर्म का संस्थापन होगा।

हनुमानः समानता–सदभाव होगा.....?

रामः एम दूसरे से प्यार होगा?

पात्र – 1: क्यां प्यार....? ये क्या लव स्टोरी है.... अबे धर्म होगा तो ये कीसी की जरूरत नहीं..... क्यां.. .. बोलाना..... बोलाना एक बार.....

सब साथः धर्म का संस्थापन होगा.....

पात्र – 2: अरे कौन हो भाई धर्म कार्य में विक्षेप करने वाले?

पात्र – 4: हम भी तो जाने नाम तेरा..... हम को सवाल करने वाले.....

हनुमानः गाने हनुमान है नाम मेरा बजरंग बलि केहलाता हुं..... राम के चरण में स्थान मेरा.... राम के गाता हुं.... सोते राम जागते राम.... उठते बैठते राम ही राम.....

पात्र – 3: लगता है ये भी हमारे वाला ही है।

पात्र – 2: वरना ऐसी पूंछ और य गेटअप कौन करता हैं।

पात्र – 4: लगता है आदमी काम का भगत है यह राम के नाम का।

पात्र – 1: सुनो भैया काम हमारा बहुत कठीन है गेटअप ये देखकर तेरा तेरे पे थोडा यकीन है.....

हनुमानः लेकिन.... आप लोग.....

सबसाथः ले सोच मत ज्यादा पुछ मत ज्यादा आदत है यह बुरी और धर्म की युद्ध की खातीर हाथा में छुरी

हनुमानः कलीयुग के इन भक्तों की ऐसी क्या मजबुरी मुख में सबके राम नाम हैं और बगल में छुरी

सबसाथः बोले मेरे साथ राम नाम पे मरेंगें, राम नाम पे मारेंगें।

रामः को (नजदीक आकर) अरे भाई तुम फीर से वोही नारे लगाते हो.... सुख चैन शांति, भाईचारे भूल जाते हो....?

पात्र – 2: लो अब तुम टांग अडाते हो.....

हनुमानः अगर अरे.... यही तो हैं रघुपति राघव, दशरथ नंदन, अयोध्या के वासी, पैर छुकर करो प्रणाम है जो शरम जरा सी।

पात्र – 3: क्या यही राम हैं.... मतलब सचमुच के राम?

(2,3,4 झुक कर प्रणाम करते हैं)

पात्र – 1: हमने प्रभुजी..... मानता हुं की आप ही है राम..... लेकिन हम भक्तों के बीच आपका क्यां काम? वहां उच्चा जगा पर बनाया आप का स्थान।

रामः लेकिन मैं तो आपके साथ रहेना चाहता हूं.....

पात्र – 2: सही बात है इस कलयुग में आप ऐसा नहीं कर सकते.....

पात्र – 1: धर्म के इस शासन में..... आपका स्थान है आसन पे (आसन)।

(नेपथ्य से राम नाम सत्य है..... राम नाम सत्य है.....)

(लाश लेकर अंदर से आते हैं।)

पात्र – 3: कैसी कठीन आई यह घडी हे राम नाम की धुन चढी है। नौकरी.....(2) मिलो दुर खडी है... .. राम नाम की धुन चढी है....(2)

हनुमानः हे राम.....

रामः नहीं प्रभु आपको नहीं..... बस ऐसे ही मुंह से निकल गया।

रामः ऐसा भी क्या हो गया पवनपुत्र, दुःखी हो गए इतने क्यों सुन कर मेरे नाम का सुत्र।

हनुमानः रामनाम का उच्चारण तो में सदीयों से ही करता हुं लेकिन गुंज इतनी भयानक होगी यह सोच भी नहीं सकता हुं।

रामः ऐसा भी क्या हुआ में भी देखना चाहता हुं।

हनुमानः में भी जानता हूं प्रभुजी आपका नाम है सच्चा.... फीर भी आप न देखे वी रहेगा अच्छा....

रामः लेकिन वत्स हुआ क्या है....

हनुमानः हैं अब में क्यां बताउं आपको..... कैसे सुनाउं इन भक्त के पापों को? राम नाम के पीछे बहा खुन इतना रावण के साथ लडाई में भी नहीं बहा था जितना।

रामः सी जानते हो वत्स.... कैसे हुई थी रामायाण की रचना। वाल्मिकी के सामने घटी एक छोटी घटना।

गीतः (प्रणय रत सारस युगल पर पारधी का तीर चलाना, दिल में उठी चीख पीडा की, बन कई रामायण का गाना....)तुम सुन रहे होना हनुमान

हनुमानः हां..... सुन भी रहा हुं..... समज भी रहां हुं.....

रामः क्या?

हनुमानः रामायण वहीं की अगर आज वाल्मिकी जिंदा होते..... तो एक साक काम नहीं चलता..... सैकडों लिखते रहते।

रामः या शायद हो सकता है कुछ भी नहीं लिख पाते.... कलम ही न चलती.....

पात्र – 1: सुनो सुनो सुनो..... राम नामकी गुंज सुनाई पहेली जीत हैं हमने पाई।
(दुकान लुटने का द्रुश्य)

पात्र – 2: ए..... देखो वहां दुकान लुटी। पात्र – 3 छोटी है या बडी.....?

पात्र – 4: अरे भाई दौडो मुफ्त की चिज क्या बुरी?

रामः वत्स ये कैसी आवाज है।....?

हनुमानः प्रभुजी इनका तो लगता है बस यही सपना राम राम जपना पराया माल अपना?

रामः लेकिन इतनी आग.....?

हनुमानः सुख अब में क्या बोलुं.... मैंने तो सिर्फ लंका नगरी में आग लगाई पर इन लोगों ने तो अपने की अयोध्या जलाई।

रामः क्या सचमुच....?

हनुमानः यह हां भगवान..... हर साल दो साल ये लोगों को अयोध्या बुलाते हैं..... वहां जलाकर मशाल पूरे देश को जलाते हैं.....

रामः बुरा मत मानना लेकिन है यह तेरी गलती.... करता रहता है हमेशा तु सब उल्टा पुल्टी....

हनुमानः क्या मैं?

रामः तुने ही नाम लीखकर मेरा पथ्थरों को तैराया था.... बडी भूल कर दी वत्स..... चक्कर उल्टा चलाया था.....

हनुमानः प्रभु मैं कुछ समझा नहीं.....

रामः मरते तभी तो ये नाम का मेरे ऐसा इस्तेमाल करते हैं..... पक्ष पार्टी चलते हैं और आम आदमी हैं..... मेरे नाम से आज पथ्थर ही तैरते हैं..... (2)

हनुमानः तो मानता हूं भगवान यह गलती मेरी..... पश्चाताप की है ये घडी.... अब नही करूंगा देरी.... आज्ञा दीजीए प्रभु.... मैं कोर्ट कचेरी जाउंगा बजरंग नहीं है नाम मेरा ऐफीडविट करवाउंगा।

रामः क्या होगा वत्स अब बदल के अपना नाम.... जब मेरे ही मुंह से नीकले शब्द.... हे राम....

हनुमानः लगता हे प्रभु इससे तो आपका वनवास ही अच्छा था.....

रामः नहीं वत्स..... अब नहीं चाहीए मुझे वनवास..... अब जो जरूरी है वह सिर्फ मनवास..... अब तो बस मुझे लोगों के दिल में बसना हैं..... अवतार कलीयुग का खत्म करके बस थोडा सा हँसना हैं....

रामः क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?

हनुमानः मैं प्रयत्न कर के देखता हुँ..... हिन्दु, मुस्लिम, शिख, इसाई, आपस में यह कैसी लडाई....(2) रघुकुल रीत सदा चली आई.... बन के रहो सब भाई – भाई.... कहेता नहीं मैं गलत कुछभी बात मेरी मानो..... राम नाम का मतलब समझाो जागो आ दिवानो.....

"देखो ओ दिवानो तुम ये काम ना करो..... राम का नाम बदनाम ना करो....."

(पात्र –1,2,3,4 हनुमान पर वार करते हैं और उसे मार कर वहीं पर गिरा देते हैं..... हनुमान हे राम बोल कर वहीं पर गिर जाते हैं.....)

रामः हनुमान क्या हुआ...? तुम कहां हो हनुमान.....?

पात्र – 2: कुरशी की तो जंग छिडी है राम नाम की धुन चढी है..... वोट ही पूजां वोटी बीती हैं राम नाम की धुन चढी है। राम नाम की धुन चढी है..... (2)

पात्र – 3: राम की मूर्ती हमने बनाई..... खुशीयों की है घडी आई.....

पात्र – 4: सुनो सुनो सुनो.... आज मूर्ती का अनावरण है..... आम जनता को आमंत्रण है.....

सब साथः ठीक वक्त पे आ जाना..... (2) आरती होगी पुजा होगी..... (3) और प्रसाद? (4) वह भी होगा ठीक वक्त पे आ जाना प्रसाद लेना मत भूलना.....

रामः मुझे कछ हो रहा है वत्स..... मुझे यहां से निकालो.....

सब साथः राम की मूर्ती हमने बनाई..... खुशियों की है घडी आई..... (भजन)

रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सिता राम.....

(मूर्ती खोलते है..... रावण की मूर्ती होती है.....)

(रावण हँसता है..... राम वहीं पर गिर पडते हें....)

हनुमानः (उठकर) और इस प्रकार रामायण की समाप्ती हुई..... रावध धर्म का पालक था, शिव जी का भक्त था, लेकिन इन्सानीयत से मुकर गया, और श्री रामचंद्रजी को उसका संहार करना पड़ा... बोलो सियावर राम चंद्र की जय.....

भजनः इश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको संमति दे भगवान। (2)

-----xxxxx-----